ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 28 अंकः 27 बुलेटिन अवधिः : 3–7 अप्रैल, 2019 दिनः मंगलवार दिनाँकः 2 अप्रैल, 2019

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	**मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर**				
	03/04/2019	**04/04/2019**	**05/04/2019**	**06/04/2019**	**07/04/2019**
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	1	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	33	35	36	36	36
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	13	14	15	16	17
बादल आच्छादन	साफ	आंशिक बादल	आंशिक बादल	मध्यम बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	80	80	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	40	45	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	008	006	010	010
वायु की दिशा	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (26 मार्च–1 अप्रैल, 2019) में आसमान साफ रहने के साथ कही–कही मध्यम बादल छाये रहे तथा मौसम साफ रहा, अधिकतम तापमान 29.6 से 34.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 12.6 से 17.4 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 81 से 89 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 24 से 63 प्रतिशत एवं मुख्यतः पश्चिम–दक्षिण–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल	अवस्था	कृषि मौसम सलाह समिति द्वारा किसानो हेतु कृषि सलाह
गेहूं	कटाई	गेहूँ एवं जौ की बालियों का रंग सुनहरा हो जाए तथा बालियों के दाने कड़े हो जाए तब फसल की कटाई करें। कटाई के उपरांत फसल को 3–4 दिनों तक धूप में सुखाकर थ्रैसर से मढ़ाई करें। विलम्ब से बोई गेहूँ या जौ की फसल अभी हरी हो तो शाम के समय हल्की सिंचाई करें। इसके गेहूँ के दाने सुडोल होंगे। तेज हवा चल रही हो तो सिंचाई न करें।
दलहनी फसलों	कटाई	दलहनी फसलों जैसे मटर, मसूर तथा चना की कटाई फसल पकने के तुरंत बाद सुबह के समय करें अन्यथा दाने झड़ने से नुकसान होता है। भण्डारण से पूर्व दानों को अच्छी तरह से सुखा लें।
चारा फसलें	बुवाई	अप्रैल माह में पशुओं हेतु हरे चारे की कमी के समाधान हेतु इस समय बहु कटाई वाली ज्वार, लोबिया, मक्का, बाजरा आदि फसलों को चारे हेतु बुवाई करें। भरपूर उत्पादन हेतु ज्वार की बुवाई अप्रैल के दूसरे सप्ताह तथा बाजरा एवं लोबिया की बुवाई अप्रैल के अंत तक अवश्य पूरा कर लें।
गन्ना	–	शरदकालीन गन्ने के साथ बोई गई अन्तः फसलों की कटाई समय से करे। इसके बाद सिंचाई करें तथा यूरिया की टाप ड्रेसिंग करें। फरवरी में बोई गई गन्ना की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई तथा यूरियां की टाप ड्रेसिंग एवं गुडाई करें।
कद्दू वर्गीय सब्जियॉ	–	कद्दू वर्गीय सब्जियो मे पत्ती धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 2.5 किग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
टमाटर, मिर्च	–	टमाटर व मिर्च की फसल मे अगेती रोपी गई फसल में सिकुड़े हुए चित्तकबरे पत्ते दिखाई देने पर ग्रसित पौधो को निकालकर नष्ट करें। तथा रस चूसने वाले कीड़ो के नियत्रंण हेतु सर्वागीं कीटनाशी का छिड़काव करें।
आम	बौर की अवस्था	आम मे बौर आने की अवस्था है। बौर आने के समय सिंचाई न करें।
पशुपालन	–	मुर्गियों के अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उनके आवास के तापमान का विशेष ध्यान रखें, उन्हें खाने के लिए सन्तुलित आहार दें तथा साफ–सुथरा एवं ताजा जल उपलब्ध करायें। गर्भवती पशुओ में प्यूरपरल बुखार को रोकने के लिए, प्रतिदिन 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण को पशुओं की प्रतिरक्षा को बढ़ाने हेतु आहार के रूप में दें। पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर